

महिला परिधानों में बदलते फैशन रुझान

साक्षी गंगवार ✉, डॉ. रितु पांडे

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, -208002.

**This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>)*

सारांश

फैशन किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन तथा समयानुसार विकसित होती जीवनशैली का सशक्त प्रतिबिम्ब होता है। वर्तमान परिदृश्य में महिला परिधान केवल पहनने की वस्तु न रहकर पहचान, आत्मविश्वास एवं सामाजिक अभिव्यक्ति का माध्यम बन गए हैं। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल मीडिया तथा डिज़ाइन नवाचारों ने महिला फैशन को तीव्र गति से परिवर्तित किया है। यह लेख महिला परिधानों में उभरते फैशन रुझानों, उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों तथा भारतीय परिधान परंपरा पर आधुनिकता के प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

परिचय

भारतीय समाज में महिलाओं के परिधान सदैव सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं से गहराई से जुड़े रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से साड़ी, सलवार-कमीज़, लहंगा-चोली जैसे परिधान नारी सौंदर्य और सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। किंतु बदलते समय के साथ-साथ महिलाओं की शिक्षा, रोजगार में भागीदारी और वैश्विक संपर्कों ने पहनावे की प्राथमिकताओं में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। आज पारंपरिक और आधुनिक परिधानों का समन्वय महिला फैशन की प्रमुख विशेषता बन चुका है।

पारंपरिक परिधानों की भूमिका

भारतीय पारंपरिक महिला परिधान अपनी रंग-सज्जा, वस्त्र निर्माण तकनीक और क्षेत्रीय विविधता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट वेशभूषा वहाँ की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है, जैसे— उत्तर भारत की बनारसी साड़ी, राजस्थान का रंगीन घाघरा-चोली, बंगाल की सूती तांत साड़ी तथा दक्षिण भारत की भव्य कांजीवरम साड़ियाँ। ये परिधान न केवल सौंदर्य का प्रतीक हैं, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही सांस्कृतिक विरासत का संवाहक भी हैं।

आधुनिक फैशन के प्रभाव

पश्चिमी संस्कृति, वैश्वीकरण और डिजिटल माध्यमों के प्रभाव से महिला परिधान शैली में व्यापक बदलाव आए हैं। आधुनिक महिलाएँ ऐसे परिधानों को प्राथमिकता दे रही हैं जो सुविधा, कार्यक्षमता और आकर्षण तीनों को संतुलित करते हों। परिणामस्वरूप इंडोवेस्टर्न फैशन—जैसे कुर्ता-जींस, ट्यूनिक, जंपसूट, और फ्यूजन ड्रेस—तेज़ी से लोकप्रिय हो रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, फैशन ब्लॉग्स, डिज़ाइनर शो और ईकॉमर्स वेबसाइट्स ने फैशन को व्यापक जनसमूह तक सुलभ बना दिया है।

वस्त्र निर्माण में नवीन तकनीकें

आधुनिक वस्त्र उद्योग में तकनीकी नवाचारों ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन (CAD), 3-डी डिज़ाइनिंग, डिजिटल प्रिंटिंग तथा स्मार्ट टेक्स्टाइल्स के प्रयोग से परिधान निर्माण अधिक सटीक, समयबद्ध और किफायती हो गया है। इसके साथ-साथ पर्यावरणीय चिंताओं के चलते सस्टेनेबल फैशन, जैव-अपघटनीय फैब्रिक और हैंडलूम आधारित वस्त्रों की माँग भी निरंतर बढ़ रही है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

महिला परिधानों में आए परिवर्तन केवल फैशन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को भी दर्शाते हैं। कार्यस्थलों, शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक आयोजनों में महिलाएँ अब ऐसे परिधान चुनती हैं जो उन्हें आत्मविश्वास और सहजता प्रदान करें। यह बदलाव सामाजिक प्रगति, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है।

निष्कर्ष

महिला परिधानों में विकसित हो रहे फैशन रुझान परंपरा, आधुनिकता और प्रौद्योगिकी के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। आज फैशन केवल सौंदर्य तक सीमित न होकर आत्म-अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक पहचान और सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बन चुका है। भविष्य में सस्टेनेबल फैशन, डिजिटल डिज़ाइन नवाचार और भारतीय हथकरघा परंपरा का पुनरुत्थान महिला फैशन की दिशा और दशा को निर्धारित करेगा।

संदर्भ

गोयल, मीना. (2020). भारतीय वस्त्र परंपरा और आधुनिक फैशन. नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।

शर्मा, प्रीति. (2019). फैशन डिज़ाइन और वस्त्र विज्ञान. जयपुर: आर्य पब्लिशिंग हाउस।

कौर, जसप्रीत. (2021). इंडोवेस्टर्न परिधानों की बढ़ती लोकप्रियता. वस्त्र विज्ञान जर्नल, 12(3), 45-52।



सिंह, रेखा. (2022). महिलाओं में बदलती जीवनशैली और परिधान चयन. लखनऊ: हिंदी अकादमी।

Vogue India. (2024). Top fashion trends among Indian women. Vogue India Online Edition.

Business of Fashion. (2023). Sustainability and the future of women's apparel.